श्री बृहत् कल्प सूत्र

।। श्री आगम-गुण-मञ्जूषा ।।

।। શ્રી આગમ-ગુણ-મંજૂષા ।।

।। Sri Agama Guna Manjusa ।।

(સચિત્ર)

प्रेरक-संपादक

अचलगच्छाधिपति प.पू.आ.भ.स्व. श्री गुणसागर सूरीश्वरजी म.सा.

४५ आगमो का संक्षिप्त परिचय

११ अंगसूत्र

१) **श्री आचारांग सूत्र :-** इस सूत्र मे साधु और श्रावक के उत्तम आचारो का सुंदर वर्णन है। इनके दो श्रुतस्कंध और कुल २५ अध्ययन है। द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और चरणकरणानुयोगोमे से मुख्य चौथा अनुयोग है। उपलब्ध श्लोको कि संख्या २५०० एवं दो चुलिका विद्यमान है।

२) **श्री सूत्रकृतांग सूत्र :-** श्री सुयगडांग नाम से भी प्रसिद्ध इस सूत्र मे दो श्रुतस्कंध और २३ अध्ययन के साथ कुलमिला के २००० श्लोक वर्तमान मे विद्यमान है। १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी अपरंच द्रव्यानुयोग इस आगम का मुख्य विषय रहा है।

३) **श्री स्थानांग सूत्र :-** इस सूत्र ने मुख्य गणितानुयोग से लेकर चारो अनुयोंगो कि बाते आती है। एक अंक से लेकर दस अंको तक मे कितनी वस्तुअें है इनका रोचक वर्णन है, ऐसे देखा जाय तो यह आगम की शैली विशिष्ट है और लगभग ७६०० श्लोक है।

४) **श्री समवायांग सूत्र :-** यह सूत्र भी ठाणांगसूत्र की भांति कराता है। यह भी संग्रहग्रंथ है। एक से सो तक कौन कौन सी चीजे है उनका उल्लेख है। सो के बाद देढसो, दोसो, तीनसो, चारसो, पांचसो और दोहजार से लेकर कोटाकोटी तक कौनसे कौनसे पदार्थ है उनका वर्णन है। यह आगमग्रंथ लगभग १६०० श्लोक प्रमाण मे उपलब्ध है।

५) **श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र (भगवती सूत्र) :-** यह सबसे बडा सूत्र है, इसमे ४२ शतक है, इनमे भी उपविभाग है, १९२५ उद्देश है। इस आगमग्रंथ मे प्रभु महावीर के प्रथम शिष्य श्री गौतमस्वामी गणधरादि ने पुछे हुए प्रश्नो का प्रभु वीर ने समाधान किया है। प्रश्नोत्तर संकलन से इस ग्रंथ की रचना हुइ है। चारो अनुयोगो कि बाते अलग अलग शतको मे वर्णित है। अगर संक्षेप मे कहना हो तो श्री भगवतीसूत्र रत्नो का खजाना है। यह आगम १५००० से भी अधिक संकलित श्लोको मे उपलब्ध है।

६) **ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र :-** यह सूत्र धर्मकथानुयोग से है। पहले इसमे साडेतीन करोड कथाअे थी अब ६००० श्लोको मे उन्नीस कथाअें उपलब्ध है।

७) **श्री उपासकदशांग सूत्र :-** इसमें बाराह व्रतो का वर्णन आता है और १० महाश्रावको के जीवन चरित्र है, धर्मकथानुंयोग के साथ चरणकरणानुयोग भी इस सूत्र मे सामील है। इसमे ८०० से ज्यादा श्लोक है।

८) **श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र :-** यह मुख्यत: धर्मकथानुयोग मे रचित है। इस सूत्र में श्री शत्रुंजयतीर्थ के उपर अनशन की आराधना करके मोक्ष मे जानेवाले उंत्तम जीवो के छोटे छोटे चरित्र दिए हुए है। फिलाल ८०० श्लोको मे ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।

९) **श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र :-** अंत समय मे चारित्र की आराधना करके अनुत्तर विमानवासी देव बनकर दूसरे भव मे फीर से चारित्र लेंकर मुक्तिपद को प्राप्त करने वाले महान् श्रावको के जीवनचरित्र है इसलीए मुख्यतया धर्मकथानुयोगवाला यह ग्रंथ २०० श्लोक प्रमाणका है।

१०) **श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र :-** इस सूत्र मे मुख्यविषय चरणकरणानुयोग है। इस आगम में देव-विद्याधर-साधु-साध्वी श्रावकादि ने पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया इसका वर्णन है। जो नंदिसूत्र मे आश्रव-संवरद्वार है ठीक उसी तरह का वर्णन इस सूत्र मे भी है। कुलमिला के इसके २०० श्लोक है।

११) **श्री विपाक सूत्र :-** इस अंग मे २ श्रुतस्कंध है पहला दु:खविपाक और दूसरा सुखविपाक, पहेले में १० पापीओं के और दूसरे में १० धर्मीओ के द्रष्टांत है मुख्यतया धर्मकथानुयोग रहा है। १२०० श्लोक प्रमाण का यह अंगसूत्र है।

१२ उपांग सूत्र

१) **श्री औपपातिक सूत्र :-** यह आगम आचारांग सूत्र का उपांग है। इस मे चंपानगरी का वर्णन १२ प्रकार के तपों का विस्तार कोणिक का जुलुस अम्बडपरिव्राजक के ७०० शिष्यो की बाते है। १५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

२) **श्री राजप्रश्नीय सूत्र :-** यह आगम सुयगडांगसूत्र का उपांग है। इसमें प्रदेशीराजा का अधिकार सूर्याभदेव के जरीए जिनप्रतिमाओं की पूजा का वर्णन है। २००० श्लोको से भी अधिक प्रमाण का ग्रंथ है।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३) **श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र :-** यह ठाणांगसूत्र का उपांग है। जीव और अजीव के बारे मे अच्छा विश्लेषण किया है। इसके अलावा जम्बुद्विप की जगती एवं विजयदेव ने कि हुइ पूजा की विधि सविस्तर बताइ है। फिलाल जिज्ञासु ४ प्रकरण, क्षेत्रसमासादि जो पढते है वह सभी ग्रंथे जीवाभिगम अपरन्च पन्नवणासूत्र के ही पदार्थ है। यह आगम सूत्र ४७०० श्लोक प्रमाण का है।

४) **श्री प्रज्ञापना सूत्र-** यह आगम समवायांग सूत्र का उपांग है। इसमे ३६ पदो का वर्णन है। प्राय: ८००० श्लोक प्रमाण का यह सूत्र है।

५) **श्री सुर्यप्रज्ञप्ति सूत्र :-**

६) **श्री चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र :-** इस दो आगमो मे गणितानुयोग मुख्य विषय रहा है। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि की गति, दिनमान ऋतु अयनादि का वर्णन है, दोनो आगमो मे २२००, २२०० श्लोक है।

७) **श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र :-** यह आगम भी अगले दो आगमों की तरह गणितानुयोग मे है। यह ग्रंथ नाम के मुताबित जंबूद्विप का सविस्तर वर्णन है। ६ आरे के स्वरूप बताया है। ४५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

८) **श्री निरयावली सूत्र :-** इन आगम ग्रंथो में हाथी और हारादि के कारण नानाजी का दोहित्र के साथ जो भयंकर युद्ध हुआ उस मे श्रेणिक राजा के १० पुत्र मरकर नरक मे गये उसका वर्णन है।

९) **श्री कल्पावतंसक सूत्र :-** इसमें पद्मकुमार और श्रेणिकपुत्र कालकुमार इत्यादि १० भाइओं के १० पुत्रों का जीवन चरित्र है।

१०) **श्री पुष्पिका उपांग सूत्र :-** इसमें १० अध्ययन है। चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बहुपुत्रिका देवी, पूर्णभद्र, माणिभद्र, दत्त, शील, जल, अणाढ्य श्रावक के अधिकार है।

११) **श्री पुष्पचुलीका सूत्र :-** इसमें श्रीदेवी आदि १० देवीओ का पूर्वभव का वर्णन है।

१२) **श्री वृष्णिदशा सूत्र :-** यादववंश के राजा अंधकवृष्णि के समुद्रादि १०पुत्र, १० मे पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्रजी, निषधकुमार इत्यादि १२ कथाएं है। अंतके पांचो उपांगो को निरियावली पन्चक भी कहते है।

दश प्रकीर्णक सूत्र

१) **श्री चतुशरण प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन एवं चारों शरण की स्वीकृति है।

२) **श्री आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस आगम का विषय है अंतिम आराधना और मृत्युसुधार

३) **श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में पंडित मृत्यु के तीन प्रकार (१) भक्त परिज्ञा मरण (२) इंगिनी मरण (३) पादोपगमन मरण इत्यादि का वर्णन है।

६) **श्री संस्तारक प्रकीर्णक सूत्र :-** नामानुसार इस पयन्ने में संथारा की महिमा का वर्णन है। इन चारों पयन्ने पठन के अधिकारी श्रावक भी है।

७) **श्री तंदुल वैचारिक प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने को पूर्वाचार्यगण वैराग्य रस के समुद्र के नाम से चीन्हित करते है। १०० वर्षो में जीवात्मा कितना खानपान करे इसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। धर्म की आराधना ही मानव मन की सफलता है। ऐसी बातों से गुंफित यह वैराग्यमय कृति है।

८) **श्री चन्दाविजय प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु सुधार हेतु कैसी आराधना हो इसे इस पयन्ने में समजाया गया है।

९) **श्री देवेन्द्र-स्तव प्रकीर्णक सूत्र :-** इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति एवं इन्द्र संबधित अन्य बातों का वर्णन है।

१०A) **श्री मरणसमाधि प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु संबधित आठ प्रकरणों के सार एवं अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन इस पयन्ने में है।

१०B) **श्री महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य पयन्ना एवं विविध आत्महितकारी उपयोगी बातों का विस्तृत वर्णन हे।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०C) **श्री गणिविद्या प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयत्रे में ज्योतिष संबधित बड़े ग्रंथो का सार है।

उपरोक्त दसों पयन्नों का परिमाण लगभग २५०० श्लोकों में बध्य हे। इसके अलावा २२ अन्य पयन्ना भी उपलब्ध हैं। और दस पयन्नों में चंदाविजय पयन्नो के स्थान पर गच्छाचार पयन्ना को गिनते हैं।

छह छेद सूत्र

(१) निशिथ सूत्र (२) महानिशिथ सूत्र (३) व्यवहार सूत्र (४) जीतकल्प सूत्र (५) पंचकल्प सूत्र (६) दशा श्रुतस्कंध सूत्र

इन छेद सूत्र ग्रन्थों में उत्सर्ग, अपवाद और आलोचना की गंभीर चर्चा है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भवभीरू, संयम में परिणत, जयणावंत, सूक्ष्म दष्टि से द्रव्यक्षेत्रादिक विचार धर्मदष्टि से करने वाले, प्रतिपल छहकाया के जीवों की रक्षा हेतु चिंतन करने वाले, गीतार्थ, परंपरागत उत्तम साधु, समाचारी पालक, सर्वजीवो के सच्चे हित की चिंता करने वाले ऐसे उत्तम मुनिवर जिन्होंने गुरु महाराज की निश्रा में योगद्वहन इत्यादि करके विशेष योग्यता अर्जित की हो ऐसे मुनिवरों को ही इन ग्रन्थों के अध्ययन पठन का अधिकार है।

चार मूल सूत्र

१) **श्री दशवैकालिक सूत्र :-** पंचम काल के साधु साध्वीओं के लिए यह आगमग्रन्थ अमृत सरोवर सरीखा है। इसमें दश अध्ययन हैं तथा अन्त में दो चूलिकाए रतिवाक्या व, विविक्त चरिया नाम से दी हैं। इन चूलिकाओं के बारे में कहा जाता है कि श्री स्थूलभद्रस्वामी की बहन यक्षासाध्वीजी महाविदेहक्षेत्र में से श्री सीमंधर स्वामी से चार चूलिकाए लाइ थी। उनमें से दो चूलिकाएं इस ग्रंथ में दी हैं। यह आगम ७०० श्लोक प्रमाण का है।

२) **श्री उत्तराध्ययन सूत्र :-** परम कृपालु श्री महावीरभगवान के अंतिम समय के उपदेश इस सूत्र में हैं। वैराग्य की बातें और मुनिवरों के उच्च आचारों का वर्णन इस आगम ग्रंथ में ३६ अध्ययनों में लगभग २००० श्लोकों द्वारा प्रस्तुत हें।

३) **श्री निर्युक्ति सूत्र :-** चरण सत्तरी-करण सत्तरी इत्यादि का वर्णन इस आगम ग्रन्थ में है। पिंडनिर्युक्ति भी कई लोग ओघ निर्युक्ति के साथ मानते हैं अन्य कई लोग इसे अलग आगम की मान्यता देते हैं। पिंडनिर्युक्ति में आहार प्राप्ति की रीत बताइ हें। ४२ दोष कैसे दूर हों और आहार करने के छह कारण और आहार न करने के छह कारण इत्यादि बातें हैं।

४) **श्री आवश्यक सूत्र :-** छह अध्ययन के इस सूत्र का उपयोग चतुर्विध संघ में छोट बडे सभी को है। प्रत्येक साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा अवश्य प्रतिदिन प्रात: एवं सायं करने योग्य क्रिया (प्रतिक्रमण आवश्यक) इस प्रकार हैं :-

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण (५) कार्योत्सर्ग (६) पच्चक्खाण

दो चूलिकाए

१) **श्री नंदी सूत्र :-** ७०० श्लोक के इस आगम ग्रंन्थ में परमात्मा महावीर की स्तुति, संघ की अनेक उपमाए, २४ तीर्थंकरों के नाम ग्यारह गणधरों के नाम, स्थविरावली और पांच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

२) **श्री अनुयोगद्वार सूत्र :-** २००० श्लोकों के इस ग्रन्थ में निश्चय एवं व्यवहार के आलंबन द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गइ है। अनुयोग याने शास्त्र की व्याख्या जिसके चार द्वार है (१) उक्रम (२) निक्षेप (३) अनुगम (४) नय

यह आगम सब आगमों की चावी है। आगम पढने वाले को प्रथम इस आगम से शुरुआत करनी पडती है। यह आगम मुखपाठ करने जैसा है।

॥ इति शम् ॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Introduction

45 *Āgamas*, a short sketch

I Eleven *Aṅgas* :

(1) **Ācārāṅga-sūtra :** It deals with the religious conduct of the monks and the Jain householders. It consists of 02 Parts of learning, 25 lessons and among the four teachings on entity, calculation, religious discourse and the ways of conduct, the teaching of the ways of conduct is the main topic here. The Āgama is of the size of 2500 *Ślokas*.

(2) **Sūyagaḍāṅga-sūtra :** It is also known as Sūtra-Kṛtāṅga. It's two parts of learning consist of 23 lessons. It discusses at length views of 363 doctrine-holders. Among them are 180 ritualists, 84 non-ritualists, 67 agnostics and 32 restraint-propounders, though it's main area of discussion is the teaching of entity. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Ṭhāṇāṅga-sūtra :** It begins with the teaching of calculation mainly and discusses other three teachings subordinately. It introduces the topic of one dealing with the single objects and ends with the topic of eight objects. It is of the size of 7600 *Ślokas*.

(4) **Samavāyāṅga-sūtra :** This is an encompendium, introducing 01 to 100 objects, then 150, 200 to 500 and 2000 to crores and crores of objects. It contains the text of size of 1600 *Ślokas*.

(5) **Vyākhyā-prajñapti-sūtra :** It is also known as Bhagavatī-sūtra. It is the largest of all the *Aṅgas*. It contains 41 centuries with subsections. It consists of 1925 topics. It depicts the questions of Gautama *Gaṇadhara* and answers of Lord Mahāvīra. It discusses the four teachings in the centuries. This *Āgama* is really a treasure of gems. It is of the size of more than 15000 *Ślokas*.

(6) **Jñātādharma-Kathāṅga-sūtra :** It is of the form of the teaching of the religious discourses. Previously it contained three and a half crores of discourses, but at present there are 19 religious discourses. It is of the size of 6000 *Ślokas*.

(7) **Upāsaka-daśāṅga-sūtra :** It deals with 12 vows, life-sketches of 10 great Jain householders and of Lord Mahāvīra, too. This deals with the teaching of the religious discourses and the ways of conduct. It is of the size of around 800 *Ślokas*.

(8) **Antagaḍa-daśāṅga-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the religious discourses. It contains brief life-sketches of the highly spiritual souls who are born to liberate and those who are liberating ones : they are Andhaka Vṛṣṇi, Gautama and other 9 sons of queen Dhāriṇī, 8 princes like Akṣobhakumāra, 6 sons of Devaki, Gajasukumāra, Yādava princes like Jāli, Mayālī, Vasudeva Kṛṣṇa, 8 queens like Rukmiṇī. It is available of the size of 800 *Ślokas*.

(9) **Anuttarovavāyi-daśāṅga-sūtra :** It deals with the teaching of the religious discourses. It contains the life-sketches of those who practise the path of religious conduct, reach the *Anuttara Vimāna*, from there they drop in this world and attain Liberation in the next birth. Such souls are Abhayakumāra and other 9 princes of king Śrenika, Dīrghasena and other 11 sons, Dhannā *Aṇagāra*, etc. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(10) **Praśna-vyākaraṇa-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the ways of conduct. As per the remark of the Nandī-sūtra, it contained previously Lord Mahāvīra's answers to the questions put by gods, Vidyādharas, monks, nuns and the Jain householders. At present it contains the description of the ways leading to transgression and the self-control. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(11) **Vipāka-sūtrāṅga-sūtra :** It consists of 2 parts of learning. The first part is called the Fruition of miseries and depicts the life of 10 sinful souls, while the second part called the Fruition of happiness narrates illustrations of 10 meritorious souls. It is available of the size of 1200 *Ślokas*.

II Twelve *Upāṅgas*

(1) **Uvavāyi-sūtra :** It is a subservient text to the *Ācārāṅga-sūtra*. It deals with the description of Campā city, 12 types of austerity, procession-arrival of Koṇika's marriage, 700 disciples of the monk Ambaḍa. It is of the size of 1000 *Ślokas*.

(2) **Rāyapaseṇī-sūtra :** It is a subservient text to Sūyagaḍāṅga-sūtra. It depicts king Pradesī's jurisdiction, god Sūryābha worshipping the Jina idols, etc. It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) **Jīvābhigama-sūtra :** It is a subservient text to Ṭhāṇāṅga-sūtra. It deals with the wisdom regarding the self and the non-self, the Jambū continent and its areas, etc. and the detailed description of the veneration offered by god Vijaya. The four chapters on areas, society, etc. published recently are composed on the line of the topics of this *Sūtra* and of the Pannāvaṇā-sūtra. It is of the size of 4700 *Ślokas*.

(4) **Pannāvaṇā-sūtra :** It is a subservient text to the Samavāyāṅga-sūtra. It describes 36 steps or topics and it is of the size of 8000 *Ślokas*.

(5) **Sūrya-prajñapti-sūtra** and

(6) **Candra-prajñapti-sūtra :** These two falls under the teaching of the calculation. They depict the solar and the lunar transit, the movement of planets, the variations in the length of a day, seasons, northward and the southward solstices, etc. Each one of these *Āgamas* are of the size of 2200 *Ślokas*.

(7) **Jambūdvīpa-prajñapti-sūtra :** It mainly deals with the teaching of the calculations. As it's name indicates, it describes at length the objects of the Jambū continent, the form and nature of 06 corners (*āra*). It is available in the size of 4500 *Ślokas*.

Nirayāvalī-pañcaka :

(8) **Nirayāvalī-sūtra :** It depicts the war between the grandfather and the daughter's son, caused of a necklace and the elephant, the death of king Ceṭika's 10 sons who attained hell after death. This war is designated as the most dreadful war of the Downward (*avasarpiṇī*) age.

(9) **Kalpāvataṁsaka-sūtra :** It deals with the life-sketches of Kālakumara and other 09 princes of king Śreṇika, the life-sketch of Padamakumara and others.

(10) **Pupphiyā-upāṅga-sūtra :** It consists of 10 lessons that covers the topics of the Moon-god, Sun-god, Venus, queen Bahuputrikā, Pūrṇabhadra, Maṇibhadra, Datta, Śila, Bala and Aṇāḍḍhiya.

(11) **Pupphaculīya-upāṅga-sūtra :** It depicts previous births of the 10 queens like Śrīdevī and others.

(12) **Vahnidaśā-upāṅga sūtra :** It contains 10 stories of Yadu king Andhakavṛṣṇi, his 10 princes named Samudra and others, the tenth one Vāsudeva, his son Balabhadra and his son Niṣaḍha.

III Ten *Payannā-sūtras* :

(1) **Āurapaccakhāṇa-sūtra :** It deals with the final religious practice and the way of improving (the life so that the) death (may be improved).

(2) **Bhattaparinnā-sūtra :** It describes (1) three types of *Paṇḍita* death, (2) knowledge, (3) Iṅgini devotee (4) *Pādapopagamana*, etc.

(4) **Santhāraga-payannā-sūtra :** It extols the *Saṁstāraka*.

**** These four payannās can also be learnt and recited by the Jain householders. ****

(5) **Tandula-viyāliya-payannā-sūtra :** The ancient preceptors call this Payannā-sūtra as an ocean of the sentiment of detachment. It describes what amount of food an individual soul will eat in his life of 100 years, the human life can be justified by way of practising a religious life.

(6) **Candāvijaya-payannā-sūtra :** It mainly deals with the religious practice that improves one's death.

(7) **Devendrathui-payannā-sūtra :** It presents the hymns to the Lord sung by Indras and also furnishes important details on those Indras.

(8) **Maraṇasamādhi-payannā-sūtra :** It describes at length the final religious practice and gives the summary of the 08 chapters dealing with death.

(9) **Mahāpaccakhāṇa-payannā-sūtra :** It deals specially with what a monk should practise at the time of death and gives various beneficial informations.

(10) **Gaṇivijaya-payannā-sūtra :** It gives the summary of some treatise on astrology.

These 10 Payannās are of the size of 2500 *Ślokas*.

Besides about 22 Payannās are known and even for these above 10 also there is a difference of opinion about their names. The Gacchācāra is taken, by some, in place of the Candāvijaya of the 10 Payannās.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

IV Six *Cheda-sūtras*

(1) Vyavahāra-sūtra, (2) Nisītha-sūtra,
(3) Mahānisītha-sūtra, (4) Pancakalpa-sūtra,
(5) Daśāśruta-skandha-sūtra and (6) Bṛhatkalpa-sūtra.

These Chedasūtras deal with the rules, exceptions and vows.

The study of these is restricted only to those best monks who are (1) serene, (2) introvert, (3) fearing from the worldly existence, (4) exalted in restraint, (5) self-controlled, (6) rightfully descerning the subtlety of entity, territories, etc. (7) pondering over continuously the protection of the six-limbed souls, (8) praiseworthy, (9) exalted in keeping the tradition, (10) observing good religious conduct, (11) beneficial to all the beings and (12) Who have paved the path of Yoga under the guidance of their master.

V Four *Mūlasūtras*

(1) **Daśavaikālika-sūtra :** It is compared with a lake of nectar for the monks and nuns established in the fifth stage. It consists of 10 lessons and ends with 02 Cūlikās called Rativākyā and Vivittacariyā. It is said that monk Sthūlabhadra's sister nun Yakṣā approached Simandhara Svāmī in the Mahāvideha region and received four Cūlikās. Here are incorporated two of them.

(2) **Uttarādhyayana-sūtra :** It incorporates the last sermons of Lord Mahāvīra. In 36 lessons it describes detachment, the conduct of monks and so on. It is available in the size of 2000 *Slokas*.

(3) **Anuyogadvāra-sūtra :** It discusses 17 topics on conduct, behaviour, etc. Some combine Piṇḍaniryukti with it, while others take it as a separate *Āgama*. Piṇḍaniryukti deals with the method of receiving food (*bhikṣā* or *gocarī*), avoidance of 42 faults and to receive food, 06 reasons of taking food, 06 reasons for avoiding food, etc.

(4) **Āvaśyaka-sūtra :** It is the most useful *Āgama* for all the four groups of the Jain religious constituency. It consists of 06 lessons. It describes 06 obligatory duties of monks, nuns, house-holders and housewives. They are : (1) *Sāmāyika*, (2) *Caturviṁśatistava*, (3) *Vandanā*, (4) *Pratikramaṇa*, (5) Kāyotsarga and (6) *Paccakhāṇa*.

VI Two *Cūlikās*

(1) **Nandī-sūtra :** It contains hymn to Lord Mahāvīra, numerous similies for the religious constituency, name-list of 24 *Tīrthaṅkaras* and 11 *Gaṇadharas*, list of *Sthaviras* and the fivefold knowledge. It is available in the size of around 700 *Ślokas*.

(2) **Anuyogadvāra-sūtra :** Though it comes last in the serial order of the 45 *Āgamas*, the learner needs it first. It is designated as the key to all the *Āgamas*. The term *Anuyoga* means explanatory device which is of four types : (1) Statement of proposition to be proved, (2) logical argument, (3) statement of accordance and (4) conclusion.

It teaches to pave the righteous path with the support of firm resolve and wordly involvements.

It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

આગમ - ૩૬

ચરણાનુયોગમય બૃહત્કલ્પસૂત્ર - ૩૬

ઉદ્દેશક ---------- ૬
અધિકાર ---------- ૮૧
ઉપલબ્ધ મૂલપાઠ ---------- ૪૭૩ શ્લોક પ્રમાણ
સૂત્રસંખ્યા ---------- ૨૦૬

ઉદ્દેશક	અધિકાર	સૂત્રસંખ્યા
૧	૨૪	૫૧
૨	૭	૨૫
૩	૧૬	૩૧
૪	૧૬	૩૭
૫	૧૧	૪૨
૬	૭	૨૦
	૮૧	૨૦૬

ઉદ્દેશક : ૧

આમાં એષણા-સમિતિ અંતર્ગત ગ્રહણૈષણાના આહાર કલ્પ, પરિભોગૈષણાના ઉપાશ્રયકલ્પ, પાત્ર કલ્પ અને વસ્ત્રકલ્પ, સ્થાનૈષણાનો આચાર કલ્પ, ગવેષણાનો વસતિ-ઉપાશ્રય કલ્પ તેમજ પરિભોગૈષણાના વસતિ-કલ્પ વગેરે વિધિ-નિષેધ અને સંઘવ્યવસ્થા જણાવી છે.

ઉદ્દેશક : ૨

આમાં ઉપરના પહેલા ઉદ્દેશકની કેટલીક બાબતો ઉપરાંત વસ્ત્ર પરિભોગૈષણા, રજોહરણ પરિભોગૈષણાના પાંચ-પાંચ પ્રકારો જણાવ્યા છે.

ઉદ્દેશક : ૩

આમાં સંઘવ્યવસ્થા, એષણા-સમિતિ ચર્મકલ્પ, વસ્ત્રકલ્પના ગ્રહણૈષણા અને પરિભોગૈષણા તેમજ એષણા સમિતિ-વસતિ કલ્પ, ભિક્ષાચર્યા ક્ષેત્રની મર્યાદા વગેરે વિધિ-નિષેધ જણાવ્યા છે.

ઉદ્દેશક : ૪

આમાં પ્રાયશ્ચિત્ત વિષયક જુદી-જુદી વાતો જણાવી સંઘવ્યવસ્થા, ગણ-સંક્રમણ, અન્ય ગણનું અધ્યાપન, કલહશાંતિ, વૈયાવૃત્ય વિધિ, વર્ષા-હેમંત-ગ્રીષ્મ ઋતુઓમાં રહેવાના વિધિ જણાવ્યા છે.

ઉદ્દેશક : ૫

આમાં ચતુર્થ મહાવ્રત પ્રાયશ્ચિત્તમાં દેવ-દેવી, પશુ-પક્ષી સ્પર્શ, રોગચિકિત્સા, નિર્ગ્રંથ-નિર્ગ્રંથીઓ, વગેરે માટે વિવિધ વિધિ-નિષેધો છે.

ઉદ્દેશક : ૬

આમાં ભાષા-સમિતિના છ વચનો, પ્રાયશ્ચિત્તના છ પ્રસંગો, કલ્પ-મર્યાદાના છ કારણ, કલ્પસ્થિતિ ચારિત્રના છ પ્રકારો સાથે આ છેદસૂત્રનો ઉપસંહાર કરવામાં આવ્યો છે.

सिरि उसहदेवसामिस्स णमो। सिरि गोडी - जिराउला - सव्वोदयपासणाहाणं णमो। नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महइमहावीरवद्धमाणसामिस्स। सिरि गोयम - सोहम्माइ सव्व गणहराणं णमो। सिरि सुगुरु - देवाणं णमो। **卐卐卐 श्रीबृहत्कल्पसूत्रम्- 卐卐卐** पीठिकाभाष्यगाथाः '८०८' नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा आमे तालपलम्बे अभिन्ने पडिग्गाहेत्तए '१००२'।१। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा आमे तालपलम्बे भिन्ने पडिग्गाहेत्तए '१०३६'।२। कप्पइ निग्गन्थाणं पक्के तालपलम्बे भिन्ने वा अभिन्ने वा पडिग्गाहेत्तए।३। नो कप्पइ निग्गन्थीणं पक्के तालपलम्बे अभिन्ने पडिग्गाहेत्तए।४। कप्पइ निग्गन्थीणं पक्के तालपलम्बे भिन्ने पडिग्गाहेत्तए, सेऽवि य विहिभिन्ने, नो चेव णं अविहिभिन्ने (पलम्बपगरणं '१०८९')।५। से गामंसि वा नगरंसि वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा पट्टणंसि वा मडम्बंसि वा आगरंसि वा दोणमुंहसि वा निगमंसि वा रायहाणिंसी वा आसमंसि वा संनिवेसंसि वा संवाहंसि वा घोसंसि वा अंसियंसि वा पुडभेयणंसि वा सपरिक्खेवंसि अबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थाणं हेमन्तगिम्हासु एगं मासं वत्थए।६। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवंसि सबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थाणं हेमन्तगिम्हासु दो मासे वत्थए, अन्तो एगं मासं बाहिं एगं मासं, अन्तो वसमाणाणं अन्तो भिक्खायरिया बाहिं वसमाणीणं बाहिं भिक्खायरिया।७। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवंसि अबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थीणं हेमन्तगिम्हासु दो मासे वत्थए।८। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवंसि सबाहिरियंसि कप्पइ निग्गंथीणं हेमंतगिम्हासु चत्तारि मासे वत्थए, अंतो दो मासे बाहिं दो मासे, अंतो वसमाणीणं अंतो भिक्खायरिया बाहिं वसमाणीणां बाहिं भिक्खायरिया, '२१-३०'।९।० से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा एगवगडाए एगदुवाराए ,गनिक्खमणपवेसाए नो कप्पइ निग्गंथाण य निग्गंथीण य एगयओ वत्थए।१०। से गासंसि वा जाव रायहाणिंसि वा अभिनिव्वगडाए अभिनिद्दुवाराए अभि (णेग) निक्खमणपवेसाए कप्पइ निग्गंथीण य एगयओ वत्थए '२३००'।११। नो कप्पइ निग्गंथीणं आवणगिहंसि वा रत्थामुहंसि वा सिङ्घाडगंसि वा तियंसि वा चउक्कंसि वा चच्चरंसि वा अंतरावणंसि वा वत्थए।१२। कप्पंइ निग्गंथाणं आवणगिहंसि वा जाव अंतरावणंसि वा वत्थए '२३३०'।१३। नो कप्पइ निग्गंथीणं अवङ्गुयदुवारिए उवस्सए वत्थए, एगं पत्थारं अंतो किच्चा एगं पत्थारं बाहिं किच्चा ओहाडियचिलिमिलियागंसि एवण्हं कप्पइ वत्थए '२३५७'।१४। कप्पइ निग्गंथाणं अवङ्गुयदुवारिए उवस्सए वत्थए '२३६६'।१५। कप्पइ निग्गंथीणं अंतोलित्तयं घडिमत्तयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३६९'।१६। नो कप्पइ निग्गंथाणं अंतोलित्तयं घडिमत्तयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३७५'।१७। कप्पइ निग्गंथाणं वा निग्गंथीण वा चेलचिलिमिलियं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३८७'।१८। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा दगतीरंसि चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा असणं वा० आहारमाहारेत्तए वा उच्चारं वा पासवणं वा खेलं वा सिंघाणं वा परिट्ठवेत्तए, सज्झायं वा करेत्तए, धम्मजागरियं वा जागरित्तए, झाणं वा झाइत्तए, काउस्सगं वा करित्तए, ठाणं वा ठाइत्तए '२४३०'।१९। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सचित्तकम्मे उवस्सए वत्थए।२०। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अचित्तकम्मे उवस्सए वत्थए '२४३८'।२१। नो कप्पइ निग्गंथीणं सागारियं अनिस्साए वत्थए।२२। कप्पइ निग्गंथीणं सागारियनिस्साए वत्थए '२४५०'।२३। कप्पइ निग्गंथाणं सागारियनिस्साए वा अनिस्साए वा वत्थए '२४५३'।२४। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सागारिए उवस्सए वत्थए, कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अप्पसागारिए उवस्सए वत्थए '२५५५'।२५। नो कप्पइ निग्गंथाणं इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए।२६। कप्पइ निग्गंथाणं पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए।२७। नो कप्पइ निग्गंथीणं पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए।२८। कप्पइ निग्गंथीणं इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए '२५८७'।२९। नो कप्पइ निग्गंथाणं पडिबद्धाए सेज्जाए वत्थए।३०। कप्पइ निग्गंथीणं पडिबद्धाए सेज्जाए वत्थए '२६३३'।३१। नो कप्पइ निग्गंथाणं गाहावइकुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं वत्थए।३२। कप्पइ निग्गंथीणं गाहावइकुलस्स मज्झंमज्झेणं गुंतुं वत्थए '२६८०'।३३। भिक्खू य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं

सौजन्य :- अं. सौ. कल्पना केतन टोकरशी सावला - जिनल - धवल कच्छ (भीसरावाळा)

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविओसवेत्ता अविओसवियपाहुडे इच्छाए परो आढाएज्जा इच्छाए परो णो आढाएज्जा इच्छाए परो णो आढाएज्जा इच्छाच परो अब्भुट्ठेज्जा इच्छाए परो नो अब्भुट्ठेज्जा इच्छाए परो वंदेज्जा इच्छाए परो नो वंदेज्जा इच्छाए परो संभुञ्जेज्जा इच्छाए नो संभुञ्जेज्जा इच्छाए परो संवसेज्जा इच्छाए परो नो संवसेज्जा इच्छाए परो उवसमेज्जा इच्छाए परो नो उवसमेज्जा, जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा जो न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा, तम्हा अप्पणा चेव उवसमियव्वं. से किमाहु भंते ? उवसमसारं खु सामण्णं '२७३८'।३४। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा वासावासासु चारए।३५। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा हेमंतगिम्हासु चारए '२७६३'।३६। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा वेरज्जविरूद्धरज्जंसि सज्जं गमणं सज्जं आगमणं सज्जं गमणागमणं करेत्तए, जे खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा वेरज्जविरूद्धंरज्जंसि सज्जं गमणं आगमणं सज्जं गमणागमणं करेइ करेंतं वा साइज्जइ से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '२७९५'।३७। निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केई वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुंछणेण वा उवनिमंतेज्जा कप्पइ से सागारकडं गहाय आयरियपायमूले ठवेत्ता दोच्चंपि उग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहारं परिहरित्तए '२८१८'।३८। निग्गंथं च णं बहिया वियारभूमिं वा विंहारभूमिं वा निक्खंतं समाणं केइ वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुंछणेण वा उवनिमंतेज्जा कप्पइ से सागारकडं० '२८१९'।३९। निग्गंथिं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठंतं चेव णवरं पवत्तिणीपायमूले ठवेत्ता०।४०। निग्गंथिं च णं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा जाव परिहारं परिहरित्तए '२८४०'।४१। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा राओ वा वियाले वा असणं वा० पडिग्गाहेत्तए।४२। नन्नत्थ एगेणं पुव्वपडिलेहिएणं सेज्जासंथारएणं '२८७३'।४३। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा राओ वा वियाले वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा पडिग्गाहेत्तए '३००५'।४४। नन्नत्थ एगाए हरियाहडियाए, सावि य परिभुत्ता वा धोया वा रत्ता वा घट्ठा वा मट्ठा वा संपधूमिया वा '३०४२' ।४५। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा राओ वा वियाले वा अद्धाणगमणं एत्तए '३१४२' ।४६।० संखडिं वा संखडिपडियाए अद्धाणगमणं एत्तए '३२१०'।४७। नो कप्पइ निग्गन्थस्स एगाणियस्स राओ वा वियाले वा बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, कप्पइ से अप्पबिइयस्स वा अप्पतइयस्स वा राओ वा वियाले वा बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा '३२२५' ।४८। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए राओ वा वियाले वा बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, कप्पइ से अप्पतइयाए वा अप्पचउत्थीए वा राओ वा वियाले वा बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा '३२४३'।४९। पुरत्थिमेणं कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा जाव अङ्गमगहाओ एत्तए दक्खिणेणं० जाव कोसम्बीओ एत्तए पच्चत्थिमेणं० जाव थुणाविसयाओ एत्तए उत्तरेणं जाव कुणालाविसयाओ एत्तए, एयावयाव कप्पइ, एयावयाव आरिए खेत्ते, नो से कप्पइ एत्तो बाहिं, तेण परं जत्थ नाणदंसणचरित्ताइं उस्सप्पन्तित्तिबेमि '३२९३'। ☆☆☆ **५०॥ पढमो उद्देसओ १॥** ☆☆☆ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सालीणि वा वीहीणि वा मुग्गाणि वा मासाणि वा तिलाणि वा कुलत्थाणि वा गोधूमाणि वा जवाणि वा जवजवाणि वा ओकिण्णाणि वा विक्खिण्णाणि वा विकिण्णाणि वा विप्पइण्णाणि वा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए '२०'।१। अह पुण एवं जाणेज्जा-नो ओकिण्णाणि नो विक्खिण्णाइं नो विकिण्णाणि नो विप्पइण्णाइं रासिकडाणि वा भित्तिकडाणि वा पुंजकडाणि वा कुलियकडाणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा हेमन्तगिम्हासु वत्थए '१०३'।२। अह पुण एवं जाणेज्जा-नो रासिकडाइं नो पुञ्जकडाइं नो भित्तिकडाइं नो कुलियकडाइं कोट्ठाउत्ताणि वा पल्लाउत्ताणि वा मञ्चाउत्ताणि वा मालाउत्ताणि वा ओलित्ताणि वा विलित्ताणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियारि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा वासावासं वत्थए '१८६'।३। उवस्सयस्स अंतो वगडाए सुरावियडकुम्भे वा सोवीरयवियडकुम्भे वा उवनिक्खित्ते सिया नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वित्थए, नो से

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ।४। उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सीओदगवियडकुम्भे वा उसिणोदगवियडकुम्भे वा उवनिक्खित्ते सिया नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा '२२१'।५। उवस्सएस्स अन्तो वगडाए सव्वराइए जोई झियाएज्जा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा '२५०'।६। उवस्सयस्स अंतो वगडाए सव्वराइए पईवे दिप्पेज्जा नो कप्पइ निग्न्थाण वा निग्गन्थक्षि सर अहालमन्दवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा '२६३'।७। उवस्सयस्स अंतो वगडाए पिण्डए वा लोयए वा खीरं वा दहिं वा सप्पिं वा नवणीए वा तेल्ले वा फाणियं वा पूवे वा सक्कुली वा सिहिरिणी वा ओकिण्णाणि वा विकिण्णाणि वा विइगिण्णाणि वा विप्पइण्णाणि वा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए '२६९'।८। अह पुण एवं जाणेज्जा नो ओकिण्णाइं० रासिकडाणि वा पुञ्जकडाणि वा भित्तिकडाणि वा कुलियकडाणि वा लञ्छिवणि सर मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा हेमंतगिम्हासु वत्थए '२७२'।९। अह पुण एवं जाणेज्जा-नो रासिगडाइं जाव नो भित्तिकडाइं कोट्ठाउत्ताणि वा पल्लाउत्ताणि वा मञ्चाउत्ताणि वा मालउत्ताणि वा कुम्भिउत्ताणि वा करभिउत्ताणि वा ओलित्ताणि वा विलित्ताणि वा पिहियाणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा वासावासं वत्थए '२७४' ।१०। नो कप्पइ निग्गन्थाणं अहे आगमणगिहंसि वा वियडगिहंसि वा वंसीमूलंसि वा रुक्खमूलंसि वा अब्भावगासियंसि वा वत्थए '३००'।११। कप्पइ निग्गन्थाणं अहे आगमणगिहंसि वा वियडगिहंसि वा वंसीमूलंसि वा रूक्खमूलंसि वा अब्भावगासियंसि वा वत्थए '३०८'।१२। एगे सागारिए पारिहारिए दो तिण्णि चत्तारि पञ्च सागारिया पारिहारिया एगं तत्थ कप्पागं ठवइत्ता अवसेसे निव्विसेज्जा '३७५'।१३। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा सागारियपिण्डं बहिया अनीहडं असंसट्ठं संसट्ठं वा पडिग्गाहोत्तए '३८६'।१४-१५। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसट्ठं पडिग्गाहेत्तए ।१६। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं संसट्ठं पडिग्गाहेत्तए ।१७। नो कप्पइ निग्गन्ताण वा निग्गंथीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसट्ठं संसट्ठं करेत्तए, जो खलु निग्गन्थो वा निग्गंथी वा सागयरिपिडुं बहिया नीहडं असंसट्ठं संसट्ठं करेइ करेन्तं वा साइज्जइ से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '४०१'।१८। सागारियस्स आहडिया सागारिएणं पडिग्गहिता तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए ।१९। सागारियस्स आहडिया सागारिएणं अपडिग्गहिता तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४२०'।२०। सागारियस्स नीहडिया परेण अपडिग्गहिता तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए ।२१। सागारियस्स नीहडिया परेण पहिग्गहिता तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४२८'।२२। सागारियस्स अंसियाओ अविभत्ताओ अव्वोच्छिन्नाओ अव्वोगडाओ अनिज्जूढाओ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए ।२३। सागारियस्स अंसियाओ विभत्ताओ वोच्छिन्नाओ वोगडाओ निज्जूढाओ तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४३८'।२४। सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देसिए चेइए पाहुडियाए सागारियस्स उवगरणजाए निट्ठिए निसट्ठे पाडिहारिए तं सागारिओ देइ सागारियस्स परिजणो देइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४४३'।२५। सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देसिए चेइए पाहुडियाए सागारियस्स उवगरणजाए निट्ठिए निसट्ठे अपडिहारिए तं सागारिओ देइ नो सागारियस्स परिजणो देइ सागारियस्स पूया देइ तम्हा दावए नो से कप्पइ० ।२६। सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देसिए चेइए पाहुडियाए सागारियस्स उवगरणजाए निट्ठिए निसट्ठे अपडिहारिए तं सागारिओ देइ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सागारियस्स परिजणो वा देइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए।२७। सागारियस्स पूयाभत्ते जाव अपडिहारिए तं नो सागारिओ देइ नो सागारियस्स परिजणो देइ सागारियस्स पूया देइ तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४४४'।२८। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा इमाइं पञ्च वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, तं जङ्गिए भङ्गिए साणए पोत्तए तिरीडपट्टे नामं पञ्चमे '४५८'।२९। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा इमाइं पञ्च रयहरणाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, तंजहा-ओण्णिए उट्टिए साणए बब्बाचि (विप्पावि) प्पए मुञ्चचिप्पिएवि नाम पञ्चमेत्तिबेमि '४६४'।☆☆☆ ३०॥ **बिइओ उद्देसओ २॥** ☆☆☆ नो कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थीणं उवस्सयंसि आसइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा असणं वा० आहारं आहारेत्तए उच्चारं वा पासवणं वा खेलं वा सिङ्घाणं वा परिट्ठवेत्तए सज्झायं वा करेत्तए झाणं वा झाइत्तए काउस्सग्गं वा करेत्तए ठाणं वा ठाइत्तए '१२३'।१। नो कप्पइ निग्गन्थीणं निग्गन्थाणं उवस्सयंसि आसइत्तए जाव ठाणं ठाइत्तए '१२६'।२। नो कप्पइ निग्गंथीणं सलोमाइं चम्माइं अहिट्ठित्तए '१४०'।३। कप्पइ निग्गन्थाणं सलोमाइं चम्माइं अहिट्ठित्तए, सेवि य परिभूते नो चेव णं अपरिभूते, सेवि य पाडिहारिए नो चेव णं अपडिहारिए, सेवि य एगराइए नो चेव णं अणेगराइए '१६४'।४। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा कसिणाइं चम्माइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '१९१'।५। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा अकसिणाइं चम्माइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '१९८'।६। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा कसिणाइं वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अकसिणाइं वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३७'।७। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अभिन्नाइं वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा भिन्नाइं वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '४१७'।८। नो कप्पइ निग्गन्थाणं उग्गहणन्तगं वा उग्गहपट्टगं वा धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '४२२'।९। कप्पइ निग्गन्थीणं उग्गहणन्तगं वा ओगाहणपट्टगं वा धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '४६५'।१०। निग्गन्थीए य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठाए चेलट्ठे समुप्पज्जेज्जा नो से कप्पइ अप्पणो निस्साए चेलाइं पडिग्गाहेत्तए, कप्पइ से पवत्तिणीनिस्साए चेलाइं पडिग्गाहेत्तए, नो य से तत्थ पवत्तिणी समाणी सिया जे तत्थ समाणे आयरिए वा उवज्झाए वा पवत्ती वा थेरे वा गणी वा गणहरे वा गणावच्छेइए वा जं च णं पुरओ कट्टु विहरति कप्पइ से तन्नीसाए चेलाइं पडिग्गाहेत्तए '५०५'।११। निग्गन्थस्स तप्पढमयाए संपव्वयमाणस्स कप्पइ रयहरणगोच्छगपडिग्गहमायाए तिहि य कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, से य पुव्वोवट्ठिए, से य पुव्वोवट्ठिए सिया एवं से नो कप्पइ रयहरणपडिग्गहगोच्छगमायाए तिहि य कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए. कप्पइ से अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं गहाय आयाए संपव्वइत्तए '५५०'।१२। निग्गन्थीए णं तप्पढमयाए संपव्वयमाणीए कप्पइ से रयहरणगोच्छगपडिग्गहमायाए चउहिं कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, सा य पुव्वोवट्ठिया सिया एवं से नो कप्पइ रयहरणगोच्छगपडिग्गहमायाए चउहिं कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, कप्पइ से अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं गहाय आयाए संपव्वइत्तए '५५२'।१३। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पढमसमोसरणुद्देसपत्ताइं चेलाइं पडिगाहेत्तए, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा दोच्चसमोसरणुद्देसपत्ताइं चेलाइं पडिगाहेत्तए '६२४'।१४। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अहाराइणियाए चेलाइ पडिगाहेत्तए '६८३'।१५। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अहाराइणियाए सेज्जासंथारयं पडिगाहेत्तए '७२९'।१६। कप्पइ निग्गंथीण वा निग्गंथीण वा अहाराइणियाए किइकम्मं करेत्तए '८६९'।१७। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतरगिहंसि चिट्ठित्तए वा आसइत्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा असणं वा० आहारमाहारेत्तए उच्चारं वा० परिट्ठवेत्तए सज्झायं वा करेत्तए झाणं वा झाइत्तए काउस्सग्गं वा करेत्तए ठाणं वा ठाइत्तए, अह पुण एवं जाणेज्जा जराजुण्णे वाहिए थेरे तवस्सी दुब्बले किलन्ते जज्जरिए मुच्छेज्ज वा पवडेजज वा एवं से कप्पइ अंतरगिहंसि चिट्ठित्तए वा जाव ठाणं वा ठाइत्तए '८८१'।१८। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतरगिहंसि जाव चउगाहं वा पंचगाहं वा आइक्खित्तए वा विभावित्तए वा किट्टित्तए वा पवेइत्तए वा नन्नत्थ एगनाएण वा एगवागरणेण वा एगगाहाए वा एगसिलोएण वा, सेवि य ठिच्चा, नो चेव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं अट्ठिच्चा '९०५'।१९। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतरगिहंसि इमाइं पंच महव्वयाइं सभावणाइं आइक्खित्तए वा जाव पवेइत्तए वा नन्नत्थ एगनाएण वा जाव एगसिलोएण वा, सेवि य ठिच्चा, नो चेव णं अट्ठिच्चा '९१३'।२०। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारियं सेज्जासंथारगं आयाए अपडिहट्टु संपव्वइत्ताए '९२५'।२१। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सागारियसंतियं सेज्जासंथारगं आयाए अहिगरणं (२४१) कट्टु संपव्वइत्तए, कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारयं आयाए विगरणं कट्टु संपव्वइत्तए '९३०'।२२। इह खलु निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारिए वा सागारियसंतिए वा सेज्जासंथारए विप्पणसेज्जा (परिभट्ठे सिया) से य अणुगवेसियव्वे सिया, से य अणुगवेसमाणे लभेज्जा तस्सेव पडि (अणुप) दायव्वे सिया, से य अणुगवेसमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ दोच्चंपि उग्गहं अणुण्णवेत्ता परिहारं परिहरित्तए '९६४'।२३। जद्दिवसं च णं समणा निग्गंथा सेज्जासंथारयं विप्पजहति तद्दिवसं च णं अवरे समणा निग्गंथा हव्वमागच्छेज्जा स च्चेव ओग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहं।२४। अत्थि या इत्थ केइ उवस्सयपरियावन्नए अचित्ते परिहरणारिहे स चेव उग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहं '१७८'।२५। से वत्थुसु अव्वावडेसु अव्वोगडेसु अपरपरिग्गहीएसु सच्चेव उग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहं।२६। से वत्थुसु वावडेसु वोगडेसु परपरिग्गहीएसु भिक्खुभावस्स अट्ठाए दोच्चंपि उग्गहे अणुन्नवेयव्वे सिया अहालन्दमवि उग्गहं '११०४'।२७। से अणुकुड्डेसु वा अणुभित्तीसु वा अणुचरियासु वा अणुफरिहासु वा अणुपंथेसु वा अणुमेरासु वा सच्चेव उग्गंहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहं '१११०'।२८। से गामंसि वा जाव रायंहाणीए (संनिवेसंसि) वा बहिया सेण्णं संनिविट्ठं पेहाए कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा तद्दिवसं भिक्खायरियाए गंतूणं पडिनियत्तए, नो से कप्पइ तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेत्तए, जो खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा तं रयणि तत्थेव उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइज्जइ से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '११५५'।२९। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सव्वओ समंता सक्कोसं जोयणं उग्गहं ओगिण्हित्ताणं चिट्ठित्तएत्तिबेसि '११९२' ☆☆☆ ।३०।। **तइओ उद्देसो ३।।** ☆☆☆ तओ अणुग्घाइया पन्नता तंजहा-हत्थकम्मं करेमाणे मेहुणं पडिसेवमाणे राइभोयणं भुञमाणे '९२'।१। तओ पारंचिया पन्नत्ता तंजहा-दुट्ठे पारंचिए पमत्ते पारंचिए अन्नमन्नं करेमाणे पारंचिए '१८१'।२। तओ अणुवट्ठप्पा पं० तं०-साहम्मियाणं तेन्नं करेमाणे परधम्मियाणं तेन्नं करेमाणे हत्थायालं दलमाणे '२६२'।३। तओ नो कप्पन्ति वाएत्तए तं०-पण्डए कीवे वाइए '३१४'।४। एवं मुण्डावेत्तए सिक्खावेत्तए सेहावित्तए उवट्ठावेत्तए संभुञ्जित्तए संवासित्तए '३२१'।५। तओ नो कप्पन्ति वाएत्तए तं०-अविणीए विगईपडिबद्धे अविओसवियपाहुडे, तओ कप्पन्ति वाएत्तए तं०-विणीए नो विगईपडिबद्धे विओसवियपाहुडे '३३५'।६। तओ दुस्सन्नप्पा पं० तं०-दुट्ठे मूढे वुग्गाहिए '३५८'।७। तओ सुस्सन्नप्पा पं० तं०-अदुट्ठे अमूढे अवुग्गाहिए '३६०'।८। निग्गंथं च णं गिलायमाणं माया वा भगिणी वा धूया वा पलिस्सएज्जा तं च गिन्थे साइज्जेज्जा मेहणुपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।९। निग्गंथिं च णं गिलायमाणिं पिया वा भाया वा पुत्ते वा पलिस्सएज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपहिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '३८७'।१०। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा असणं वा० पढमाए पोरिसीए पडिग्गाहेत्ता चउत्थं पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेत्तए, से य आंच्च उवाइणाविए सिया तं नो अप्पणा भुञ्जा नो अन्नेसिं अणुप्पदेज्जा एगन्तमन्ते बहुफासुए पएसे (थंडिले) पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया, तं अप्पणा भुञमाणे अन्नेसिं वा दल (अणुप्पदे) माणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं।११। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा असणं वा० परं अद्धजेयणमेराए उवाइणावेत्तए, से य आहच्च उवाइणाविए सिया तं नो अप्पणा भुञ्जा नो अन्नेसिं अणुप्पदेज्जा एगन्तमन्ते बहुफासुए पएसे पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया, तं अप्पणा भुञमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं '४३९'।१२। निग्गन्थेण य गाहावइकुलं पिण्डबायपडियाए अणुप्पविट्ठेणं अन्नयरे अचित्ते अणेसणिज्जे पाणभोयणे पडिग्गहिए सिया अत्थि य

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इत्थ केइ सेहतराए अणुवट्ठावियए कप्पइ से तस्स दाउं वा अणुप्पदाउं वा, नत्थि य इत्थ केइ सेहतराए अणुवट्ठावियए तं नो अप्पणा भञ्जेज्जा नो अन्नेसिं दावए (अणुप्पदेज्जा) एगन्ते बहुफासुए पएसे पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया '४६३'।१३। जे कडे कप्पट्ठियाणं कप्पइ से अकप्पट्ठियाणं नो से कप्पइ कप्पट्ठियाणं, अकप्पठियाणं नो से कप्पइ कप्पठियाणं कप्पइ से अकप्पटिठयाणं, कप्पे ठिया कप्पठिया अकप्पे ठिया अकप्पटिठया '४८६'।१४। भिक्खू य गणाओ अवक्कम इच्छेज्जा अन्नं अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ अणापुच्छित्ताणं आयरियं वा उवज्झायं वा पवत्तिं वा थेरं वा गणिं वा गणहरं वा गणावच्छेइयं वा अन्न गणं उपसंपज्जित्ताणं विहरितए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए '५७४'।१५। गणावच्छेइए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरन्ति एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।१६। आयरियउवज्झाए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्न गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं निक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंचज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए '५७७'।१७। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा उवज्झायं वा पवत्तिं वा थेरं वा गणिं वा गणहरं वा गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं लभेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लभेज्जा एवं सेनो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, '५९४'।१८। गणावच्छेइए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता० विहरित्तए कप्पइ से गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ताणं अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं लभेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लभेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गरं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।१९। आयरियउवज्झाए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं अनिक्खिवित्ता० विहरित्तए, कप्पइ से आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं निक्खिवित्ताणं अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरंति एवं से

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए, उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं लभेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लभेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।२०। भिक्खू य इच्छेज्जा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से तेसिं कारणं दीवेत्ता०।२१। गणावेच्छेइए य इच्छेज्जा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से गणावच्छेसयस्स गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ता० उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झाय उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ तेसिं कारणं अदीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से तेसिं कारणं दीवेत्ता अन्नं आयरियं वा उवज्झायं वा उद्दिसावेत्तए '६१७'।२२। आयरियउवज्झाए इच्छेज्जा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसा वित्तए, कप्पइ से० निक्खिवित्ता० उद्दिसावित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ तेसिं कारणं अदीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से तेसिं कारणं दीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए '६२१'।२३। भिक्खू य राओ वा वियाले वा आहच्च वीसुम्भेज्जा, तं च सरीरगं केई वेयावच्चकरा भिक्खू इच्छेज्जा एगंतमते बहुफासुए पएसे परिट्ठवेत्तए, अत्थि य इत्थ केइ सागारियसंतिए उवगरणजाए अचित्ते परिहरणारिहे कप्पइ से सागारकडं गहाय तं सरीरगं एगंते बहुफासुए पएसे परिट्ठवेत्ता तत्थेव उवनिक्खेवियव्वे सिया '६९०'।२४। भिक्खू य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं अविओसवेत्ता नो से कप्पइ गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, भिक्खू० नो से कप्पइ बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिंवा निक्ख० पवि० वा, भिक्खू० गामाणुगामं दुइज्जित्तए० गणाओ गणं संकमित्तए,० वासावासं वा वत्थए, जत्थेव अप्पणो आयरियउवज्झायं पासेज्जा बहुस्सुयं बज्झागामं कप्पइ से तस्सन्तिए आलोएत्तए पडिक्कमित्तए निन्दित्तए गरिहित्तए विउट्टित्तए विसोहित्तए अकरणाए अब्भुट्ठित्तए अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जित्तए, से य सुएण पट्ठविए आइयव्वे सिया, से य सुएणं नो पट्ठविए नो आइयव्वे सिया, से य सुएणं पट्ठविज्जमाणे नो आइयइ निज्जूहियव्वे सिया '७१८'।२५। परिहारकप्पट्ठियस्स णं भिक्खुस्स कप्पइ आयरियउवज्झायाणं तद्दिवसं एगगिहंसि पिंडवायं दवावेत्तए, तेण परं नो से कप्पइ असणं वा० दाउं वा अणुप्पदाउं वा, कप्पइ से अन्नयरं वेयावडियं करेत्तए, तं०-उट्ठावणं वा निसीयावणं वा तुयट्टावणं वा उच्चारपासवणखेलजल्लसिङ्घाणाण विगिंचणं वा विसोहणं वा करेत्तए, अह पुण एवं जाणेज्जा छिन्नावाएसु पंथेसु तवस्सी आउरे झिज्झिए पिवासिए दुब्बले किलंते मुच्छेज्ज वा पवडेज्ज वा एवं से कप्पइ असणं वा० दाउं वा अणुप्पदाउं वा '७४१'।२६। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाओ पंच महण्णवाओ महानईओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वञ्जियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा, तं०-गंगा जउणा सरयू कोसिया मही ।२७। अह पुण एवं जाणेज्जाएरावई कुणालाए, जत्थ चक्किया एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा एवं णं कप्पइ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा, जत्थ एवं नो चक्किया एवं णं नो कप्पइ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा '७८८'।२८। से तणेसु वा तणपुञ्जेसु वा पलालेसु वा पलालपुञ्जेसु वा अप्पंडेसु अप्पपाणेसु अप्पबीएसु अप्पहरिएसु अप्पोसेसु अप्पुतिङ्गपणगदगमट्टियमक्कडसंताणएसु अहेसेवणमायाए नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए हेमन्तगिम्हासु वत्थए ।२९। से तणेसु वा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव संताणएसु वा उप्पिंसेवणमायाए कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए हेमन्तगिम्हासु वत्थए ।३०। से तणेसु वा जाव संताणएसु अहेरयणिमुक्कामउडेसु नो कप्पइ निग्गन्थाण वानिग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए वासावासं वत्थए ।३१। से तणेसु वा जाव संताणएस उप्पिंरयमणिमुक्कमउडेसु कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा तहप्पगारे उवस्सए वत्थएत्ति बेमि '८०५'।**३२॥ चउत्थो उद्देसओ ४॥** देवे य इत्थिरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थे साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।१। देवे य पुरिसरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थिं पडिग्गहेज्जा तं च निग्गन्थे साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।२। देवी य इत्थिरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थे साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।३। देवी य पुरिसरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थिं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '४४'।४। भिक्खू य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं अविओसवेत्ता इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ तस्स पञ्च राइंदियाइं छेयं कट्टु परिणिव्वविय २ दोच्चंपि तमेव गणं पडिनिज्जाएयव्वे सिया, जहा वा तस्स गणस्स पत्तियं सिया '१००'।५। भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे संथडिए निव्विइगिच्छासमावण्णेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा सेजं च आसयंसि जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्कमइ, तं अप्पणा भुञ्जेमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।६। भिक्खू य उगयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे संथडिए विइगिच्छासमावन्नेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च आसयंसि जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिञ्चमाणे वा विमोहेमाणे वा नो अइक्कमइ, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभोयपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।७। भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंक्प्पे असंथडिए निव्विइगिच्छसमावण्णेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा० जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च आसयंसि जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभो० चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।८। भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे असंथडिए विइगिच्छासमावन्नेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च मुहे जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहंसिं तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा न अइक्कमइ, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '१४५'।९। इह खलु निग्गन्थस्स वा निग्गन्थीए वा राओ वा वियाले वा सपाणे सभोयणे उग्गाले आगच्छेज्जा तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्कमइ, तं उग्गिलित्ता पच्चोगिलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं '१७७'।१०। निग्गन्थस्स य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठस्स अंतो पडिग्गहंसि से पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा तं च संचाएइ-विगिञ्चित्तए वा विसोहित्तए वा तओ पुव्वामेव आलोइय २ विसोहिय २ तओ संजयामेव भुञ्जेज्ज वा पिएज्ज वा, तं च नो संचाएइ विगिञ्चत्तए वा विसोहेत्तए वा तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं दावए एगन्ते बहुफासुए पएसे थंडिले पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया '२१३'।११। निग्गन्थस्स य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठस्स अंतो पडिग्गहगंसि दए वा दगरए वा दगफुसिए वा परियावज्जेज्जा से य उसिणे भोयणजाए परिभोत्तव्वे सिया, से य नो उसिणे सीए भोयणजाए तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं दावए एगन्ते बहुफासुए पएसे थंडिले पडिलोहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया '२३५'।१२। निग्गन्थीए य राओ वा वियाले वा उच्चारं वा पासवणं वा विगिञ्चमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्नयरे पसुजाइय वा पक्खिजाइए वा अन्नयरं इन्दियजायं परामुसेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा हत्थकम्मपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।१३। निग्गन्थीए य राओ वा वियाले वा उच्चारं वा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासवणं वा विगिञ्चमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्नयरे पसुजाइए वा पक्खिजाइए वा अन्नयरंसि सोयंसि ओगाहेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '२४५'।१४। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए होत्तए।१५। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा।१६। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा।१७। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए गामाणुगामं दूइज्जित्तए।१८। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए वासावासं वत्थए '२५१'।१९। नो कप्पइ निग्गन्थीए अचेलियाए होत्तए '२५६'।२०। नो कप्पइ निग्गन्थीए पेइयाए होत्तए '२६०'।२१ नो कप्पइ निग्गन्तीए वोसट्ठकाइयाए होत्तए '२६१'।२२। नो कप्पइ निग्गन्थीए बहिया गामस्स वा जाव संनिवेसस्स वा उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहाए एगपाइयाए च्चि आयावणाए आयावेत्तए।२३। कप्पइ से उवस्सयस्स अंतो वगडाए संघाडिपडिबद्धाए पलंबियबाहिं (हु) याए समतलपाइयाए ठिच्चा आयावणाए आयावेत्तए '२६९'।२४। नो कप्पइ निग्गन्थीए ठाणाइयाए होत्तए।२५। नो कप्पइ निग्गन्थीए पडिमट्ठाइयाए होत्तए।२६। नो कप्पइ निग्गन्थीए उक्कुडियासणियाए होत्तए।२७। नो कप्पइ निग्गन्थीए नेसिज्जियाए होत्तए।२८। नो कप्पइ निग्गन्थीच वीरासणियाए होत्तए।२९। नो कप्पइ निग्गन्थीए दण्डासणियाए होत्तए।३०। नो कप्पइ निग्गन्थाण लगण्डासाइयाए होत्तए।३१। नो कप्पइ निग्गन्थीए ओमंथियाए होत्तए।३२। नो कप्पइ निग्गन्थीए उत्ताणियाए होत्तए।३३। नो कप्पइ निग्गन्थीए अम्बखुज्जियाए होत्तए।३४। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगपासियाए होत्तए '२८१'।३५। नो कप्पइ निग्गन्थीणं आउअणपट्टगं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।३६। कप्पइ निग्गन्थीणं आउअणपट्टगं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।३७। नो।३०। नो कप्पइ निग्गन्थीएकप्पइ निग्गन्थीणं सावस्सयंसि आसणंसि चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा आसइत्तए वा तुयट्टित्तए वा।३८। कप्पइ निग्गन्थीणं सावस्सयंसि आसणंसि चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा आसइत्तए वा तुयट्टित्तए या।३९। नो कप्पइ निग्गन्थीणं सविसाणंसि फलगंसि वा पीढंसि वा जाव तुयट्टित्तए वा।४०। कप्पइ निग्गन्थीणं जाव तुयट्टित्तए वा '२८९'।४१। नो कप्पइ निग्गन्थीणं सवेण्टयं लाउयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।४२। कप्पइ निग्गन्थीणं सवेण्टयं लाउयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२९०'।४३। नो कप्पइ निग्गन्थीणं सवेण्टया पायकेसरिया धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।४४। कप्पइ निग्गन्थाणं सवेण्टया पायकेसरिया धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२९१'।४५। नो कप्पइ निग्गन्थीणं दारूदण्डयं पायपुञ्छणं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।४६। कप्पइ निग्गन्थाणं दारूदण्डयं पायपुञ्छणं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२९२'।४७। नो कप्पइ निग्गंन्थाणं वा निग्गंथीण वा अन्नमन्नस्स मोयं आइत्तए वा आयमित्तए वा नन्नत्थ आगाढानागाढेसु रोगायङ्केसु '३१२'।४८। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पारियासियस्स आहारस्स जाव तयप्पमाणमेत्तमवि भूइप्पमाणमेत्तमवि बिंदुप्पमाणमेत्तमवि आहारमाहारेत्तए, नन्नत्थ आगाढानागाढेसु रोगायङ्केसु '३२८'।४९। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पारियासिएणं आलेवणजाएणं गायाइं (२४२) आलिम्पित्तए वा विलिंपित्तए वा, नन्नत्थ आगाढानागाढेहिं रोगायङ्केहिं '३४०'।५०। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पारियासिएणं तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा गायाइं अब्भङ्गित्तए वा मक्खेत्तए वा, नन्नत्थ आगाढानागाढेहिं रोगायङ्केहिं (नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा कक्केण वा लोद्धेण वा पधूवणेण वा अन्नयरेण वा आलेववणजाएणं गायाइं उव्वलेत्तए वा उव्वट्टेत्तए वा, नन्नत्था आगानागाढेहिं रोगायङ्केहिं) '३४८'।५१। परिहारकप्पट्ठिए णं भिक्खू बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा, से य आहच्च अइक्कमेज्जा, तं च थेरा जाणेज्जा, अप्पणो आगमेणं अन्नेसिं वा अंतिए सोच्चा, तओ पच्छा तस्स अहालहुस्सए नाम ववहारे पट्टवियव्वे सिया '३६२'।५२। निग्गन्थीए य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठाए अन्नयरे पुलागभत्ते पडिग्गाहिए सिया, सा य संथरेज्जा कप्पइ से तद्दिवसं तेणेव भत्तट्ठेणं पज्जोसवेत्तए, नो से कप्पइ दोच्चंपि गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए० पविसित्तए, सा य नो संथरेज्जा एवं से कप्पइ दोच्चंपि गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वत्ति बेमि '३७५'।☆☆☆ **५३। पञ्चमो उद्देसओ ५॥** ☆☆☆ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा इमाइं छ अवयणाइं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वइत्तए, नं०-अलियवयणे हीलियवयणे खिंसियवयणे फरूसवयणे गारत्थियवयणे विओसवियं वा पुणो उदीरेत्तए '६९'।१। छ कप्पस्स पत्थारा पं० तं०-पाणाइवायस्स वायं वयमाणे मुसावायस्स वायं वयमाणे अदिन्नादाणस्स वायं वयमाणे अविरइयवायं वयमाणे अपुरिसवायं वयमाणे दासवायं वयमाणे, इच्चेए कप्पस्स छप्पत्थारे पत्थरेत्ता सम्मं अप्पडिपूरेमाणे तट्ठाणपत्ते सिया '९९'।२। निग्गंथस्स य अहे पायंसि खाणुए वा कंटए वा हीरे वा सक्करे वा पयिवज्जेज्जा हं च निग्गंथे नो संचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं निग्गंथी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्कमइ।३। निग्गंथस्स य अच्छिंसि पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा, तं च निग्गंथे नो संचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं निग्गंथी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्कमइ।४। निग्गंथीए य अहे पायंसि खाणूए वा कंटक वा ही वा सक्कर वा परियावज्जेज्जा तं च निग्गंथी नो संचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं च निग्गंथे नीहरमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ।५। निग्गथीए व अच्छिंसि पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा, तं च निग्गंथी नो संचाएइ नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं च निग्गंथे नीहरमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ '११८'।६। निग्गंथे निग्गंथिं दुग्गंसि वा विसमंसि वा पव्वयंसि वा पक्खलमाणिं वा ओवुज्झमाणिं वा गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ।७। निग्गंथे निग्गंथिं सेयंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा उदयंसि वा ओकसमाणिं वा ओवुज्झमाणिं वा गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ।८। निग्गंथे निग्गंथिं नावं आरूभमाणिं वा ओरूभमाणिं वा गेण्हमाणे वा अवलम्बामणे वा नाइक्कमइ '१३१'।९। खित्तचित्तं निग्गंथि निग्गंथे गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा नातिक्कमति '१७८'।१०। दित्तचित्तं निग्गंथिं निग्गंथे गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ '१९३'।११। जक्खाइट्ठं० ।१२। उम्मायपत्तं० ।१३। उवसग्गपत्तं०।१४। साहिगरणं०।१५। सपायच्छित्तं०।१६। भत्तपाणपडियाइक्खियं०।१७। अट्टजायं निग्गंथिं निग्गंथे गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ '२४८'।१८। छ कप्पस्स पलिमंथू पं० तं० कोक्कुइए संजमस्स पलिमंथू मोहरिए सच्चवयणस्स पलिमंथू तिन्तिणिए एसणागोयरस्स पलिमंथू चक्खुलोलुए ईरियावहियाए पलिमंथू इच्छालोभे मुत्तिमग्गस्स पलिमंथू भिज्जानियाणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमंथू, सव्वत्थ भगवया अनियाणया पसत्था '२८६'।१९। छव्विहा कप्पट्ठिई पं० तं०-सामाइयसंजयकप्पट्ठिई छेओवट्ठावणियसंजयकप्पट्ठिई निव्विसमाणकप्पठिई निव्विट्ठकाइयकप्पट्ठिई जिणकप्पट्ठिई थेरकप्पट्ठिइत्तिबेमि '४२८'।२०। छट्ठो उद्देसओ ६॥ **卐卐卐 इति श्रीबृहत्कल्पच्छेदसूत्रं 卐卐卐**

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org